होगा ? अगर इस का उपाय नहीं होगा, तो इस का परिणाम बहुत भयंकर होगा । शायद यह हम को आज दिखाई नहीं पड़ रहा है । मूक को तो दिखाई ही नहीं देता है, लेकिन जिन के पास आंखें हैं, उन को भी दिखाई नहीं पड़ रहा है ।

क्षितिज लाल होता चला जा रहा है,
तुम्हें यह प्रकृति की छटा जंच रही है ।

श्रीमन्, यह देखना होगा कि इस का परिणाम कितना भयंकर हो सकता है । ये भूमिहीन अब अधिक दिन तक इस को बरदाश्त नहीं कर सकेंगे कि उन को जीविका का कोई साधन न मिले । बहुत पहले कहा गया था कि भूमि हीनों को ज़मीन तीन तरह से मिल सकती है । या तो करुणा से मिल सकती है और इस करुणा के जागृत करने का प्रयास आचार्य विनोबा भावे ने किया था । हमारे लोक नायक भी उन के साथ चले, लेकिन दुर्भाग्य से वह प्रयोग असफल सिद्ध हुआ । करुणा जागृत कर के, सद्भावना जागृत कर के, लोगों के मन में यह भावना पैदा कर के कि ये भी हमारे भाई हैं, इन को भी हिस्सा देना चाहिये, उन के साथ हम ने अन्याय किया है, इस तरह से उनके हृदय को परिवर्तित कर के, भूमिहीनों को ज़मीन दिलाने का वह प्रयास सफल सिद्ध नहीं हुआ ।

अब यदि करुणा से वह नहीं हो पाया, तो फिर दूसरा तरीका कानून का हो सकता है । कानून से उन को ज़मीन दिलवाइये और वह कानून यही हो सकता है—जैसा नायक जी ने यह प्रस्ताव यहां पर रखा है—जहां भी ज़मीनें हैं, उन ज़मीनों को खेती-योग्य बना कर, इन को दो । यह कानून संसद बनाये, हिन्दुस्तान की सब से बड़ी सर्वोच्च सत्ता यहां पर बैठी हुई है—कानून बनाने के लिये, यह प्रस्ताव यहां पर पास हो जाय, तो फिर कानून अवश्य बनेगा ।

अगर कानून के ज़रिये भी आप ने ज़मीन नहीं दी तो फिर तीसरा तरीका कृपाण का है । या तो यह काम करुणा से हो सकता था—जब करुणा से नहीं हुआ, तो कानून से दीजिये, यदि कानून से भी नहीं दिया, तो फिर कृपाण उठाने के लिये वे विवश हो जायेंगे और यदि स्थिति आई, तो फिर इस देश का लोकतन्त्र बचने वाला नहीं है । हम नहीं चाहते हैं कि वह दिन कभी आये, इस देश की जनता को ।

**सभापति महोदय** : शास्त्री जी, आप कितना समय लेना चाहते हैं ?

**श्री यमुना प्रसाद शास्त्री** : मुझे कम से कम दस मिनट और चाहियें ।

**सभापति महोदय** : तब आप ऐसा कीजिये, इस के लिये अब जो भी कार्यवाही का दिन आगे आयेगा, उस दिन अपना भाषण जारी रखिये । लेकिन सभा समाप्त हो, उस के पहले माननीय मंत्री जी बिज़नेस एडवाइज़री कमेटी की रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे और श्री चन्द्रप्पन उस के बारे में कुछ कहना चाहते हैं ।

**श्री उग्रसेन** : माननीय सभापति महोदय, हमारा नाम लिस्ट में है या नहीं ?

**श्री महीलाल** : मेरा नाम भी नोट कर लीजिये । . . . . (**व्यवधान**) . . .

**सभापति महोदय** : नेक्स्ट सूची में श्री कल्याण जैन का नाम है, उन के बाद श्री उग्रसेन का नाम है । अन्य लोग अपनी स्लिप भेज दें ।

---

**18.00 hrs.**

## BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

### TWENTY-FOURTH REPORT

**THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND LABOUR**

(SHRI RAVINDRA VARMA): I beg to present the Twenty-fourth Report of the Business Advisory Committee.

PROF. P. G. MAVALANKAR (Gandhinagar): We do not know what about that report is about. Kindly ask him to give us the details.

SHRI RAVINDRA VARMA: The hon. Member knows very well that the Minister of Parliamentary Affairs only says that he presents the Report. Then the Report is printed and circulated and the Minister moves the next day that the report be adopted by the House. Therefore, the hon. Member will get an opportunity to say whatever he wants to say on the report.

SHRI DHIRENDRANATH BASU (Katwa): Give us the gist of the report.

PROF. P. G. MAVALANKAR: Next week is the last week. That is why we are requesting you to give us some indication of what is going to be discussed next week. Then only can we come prepared, otherwise we cannot.

SHRI RAVINDRA VARMA: The statement of Government Business for next week has already been made this morning.

PROF. P. G. MAVALANKAR: All right, agreed.

---

**18.02 hrs.**

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday August 28, 1978/Bhadra 6, 1900 (Saka).*

GMGIPND—L—2572LS—Jc 3766—13-10-78—380